बुकर टी. वाशिंगटन

एक गुलाम का संघर्ष

बुकर टी. वाशिंगटन

सिविल वॉर के पहले अमरीका के दक्षिणी राज्यों में सब नीग्रो गुलाम थे. जो गोरा व्यक्ति बुकर टी वाशिंगटन का स्वामी था, उसके लिए उन्हें बहुत काम करना पड़ता था. सिविल वॉर के बाद ही बुकर टी वाशिंगटन रात में स्कूल जा पाए. आगे चल कर वह एक अध्यापक बने और अन्य नीग्रो लोगों की सहायता करने लगे. फिर वह उस प्रथम स्कूल के प्रिंसिपल बने जो नीग्रो लोगों ने स्वयं स्थापित किया था. यह उस महान व्यक्ति की जीवनी है जो गुलाम पैदा हुआ था लेकिन जिसने बड़े होने पर अन्य गुलामों को एक स्वतंत्र जीवन जीने के लिए प्रशिक्षित किया.

बुकर टी. वाशिंगटन

एक गुलाम का संघर्ष
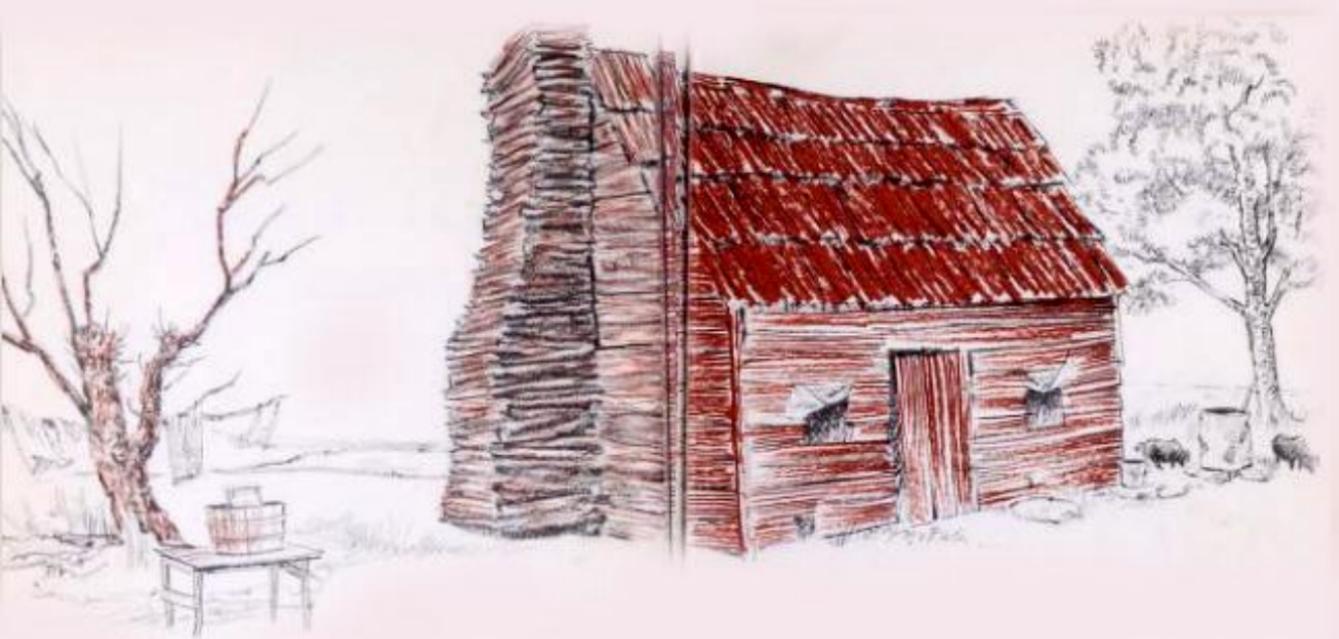
बुकर टी. वाशिंगटन का जन्म वर्जिनिया में सन 1858 में हुआ था.

वह कभी जान न पाये की उनके पिता कौन थे. वह अपनी माँ, बड़े भाई और एक बहन के साथ रहते थे. उनका घर एक खेत में एक कमरे का छोटा-सा झोंपड़ा था.

बुकर और उनका परिवार गुलाम था. वह सब उस गोरे व्यक्ति की संपत्ति थे जो उस खेत का स्वामी था. सन 1858 में अमरीका के दक्षिण राज्यों में कई नीग्रो गुलाम थे. लेकिन उत्तरी राज्यों में नीग्रो स्वतंत्र थे.

बुकर और उनके परिवार के लिये उनका जीवन सरल या सुखमय बिल्कुल नहीं था. सर्दियों में उनका झोंपड़ा बहुत ठंडा हो जाता था और गर्मियों में खूब गर्म.

झोंपड़े में कोई चारपाई नहीं थी. रात में बुकर और उनका परिवार ज़मीन पर ही सोता था.

सब गुलामों को खेतों में कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी. जैसे ही बुकर थोड़े बड़े हुए तो उन्हें भी खूब काम करना पड़ा.

कभी-कभी वह बाल्टी में पानी भरते और भारी बाल्टी को उठा कर उन लोगों के पास ले जाते जो खेत में काम कर रहे होते.

कभी-कभी वह अनाज को पिसवाने के लिए चक्की ले जाते. चक्की खेत से तीन मील दूर थी. जब वह चक्की से लौटते तो अँधेरा हो गया होता.

बुकर को अँधेरे में जंगल के बीच से अकेले आने में डर लगता था. लेकिन उनके पास कोई उपाय न था. चक्की से घर वापस आने का कोई दूसरा रास्ता भी न था.

खेत के स्वामी की एक छोटी बेटी थी. वह पढ़ने के लिये स्कूल जाया करती थी. एक दिन बुकर से कहा गया कि वह लड़की की किताबें उठा कर स्कूल तक ले जायें. स्कूल पहुँच कर लड़की भीतर चली गई.

बुकर को बाहर ही रुकना पड़ा. दक्षिण में नीग्रो बच्चे पढ़ने के लिये स्कूल नहीं जा सकते थे. इस कारण दक्षिण में अधिकतर नीग्रो पढ़ना नहीं जानते थे. कई तो अपना नाम भी न लिख पाते थे.

स्कूल के दरवाज़े के निकट खड़े बुकर ने भीतर झाँका. उसने छोटी लड़की और अन्य गोरे बच्चों को पढ़ते देखा.

उसी दिन से स्कूल जाने की इच्छा उनके मन में पनपने लगी.

वह पढ़ना और लिखना सीखना चाहते थे.

जब बुकर बहुत छोटे थे तब अमरीका में सिविल वॉर शुरू हुई.

कई कारणों से लोग लड़ाइयाँ लड़ते हैं. उत्तर राज्यों और दक्षिण राज्यों के पास सिविल वॉर लड़ने के कई कारण थे.
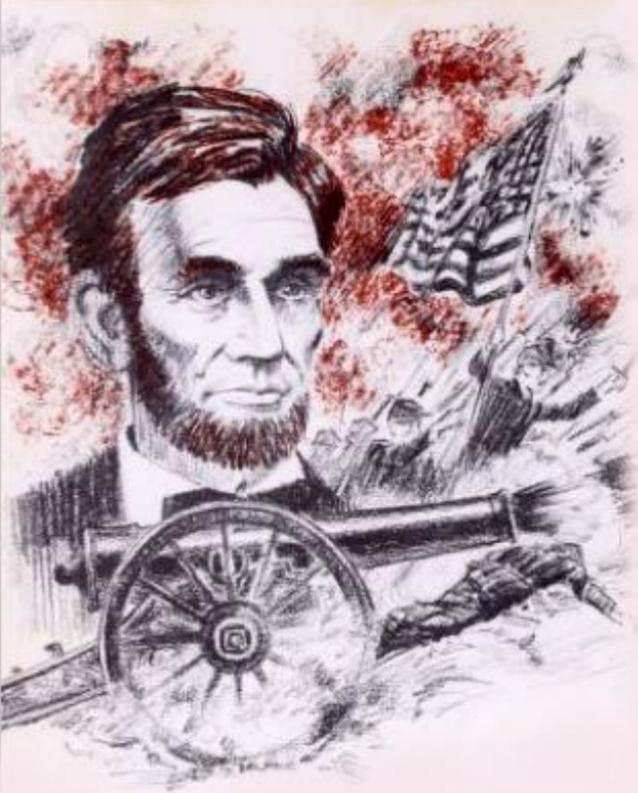
एक कारण यह था कि उत्तरी राज्य चाहते थे कि अमरीका में नीग्रो स्वतंत्र हों.
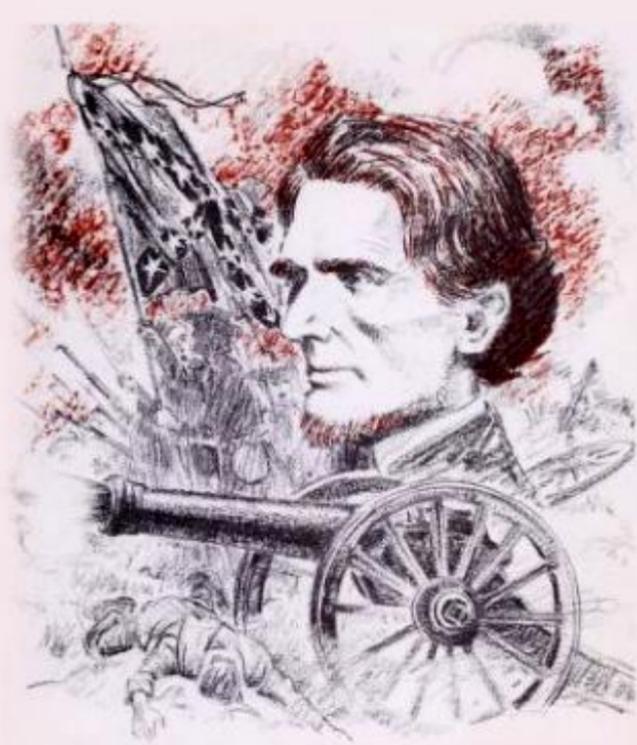
दक्षिणी राज्य उन्हें गुलाम रखना चाहते थे.

इस कारण चार वर्षों तक उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच एक भयंकर युद्ध हुआ.
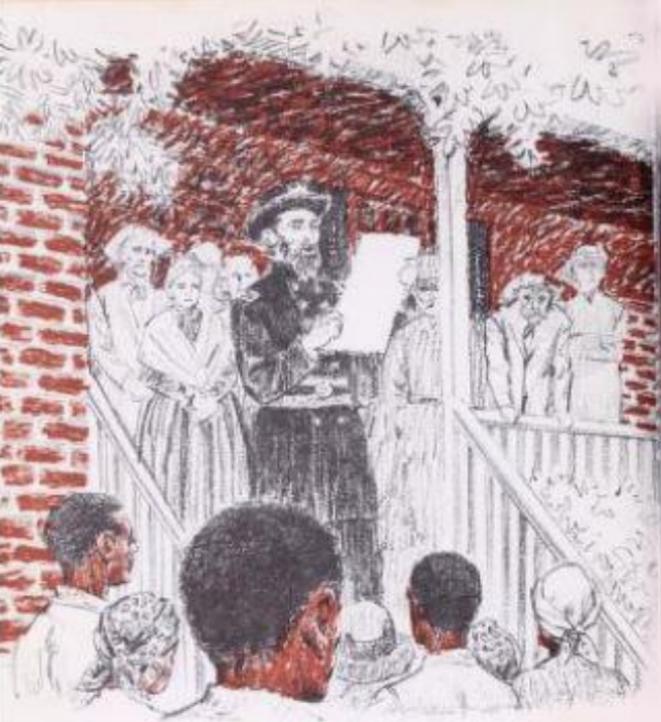
एक सुबह जब बुकर सात वर्ष के थे, सब गुलामों को काम से वापस बुलाया गया. वह सब उस घर में इकट्ठे हुए जहां उनका स्वामी रहता था.

खेत के मालिक ने बताया कि सिविल वॉर समाप्त हो गयी थी और उत्तरी राज्य जीत गये थे.

उत्तर से आया एक सैनिक वहां उपस्थित था. उसने एक सन्देश पढ़ा. यह दासों को मुक्त करने की प्रेसिडेंट लिंकन की घोषणा थी.

इस घोषणा में बताया गया था कि अमरीका में दास प्रथा सदा के लिए समाप्त कर दी गई थी.

अब कोई नर, नारी या बच्चा किसी की संपत्ति नहीं हो सकता था. दक्षिण राज्यों के सब गुलाम मुक्त हो गये थे.
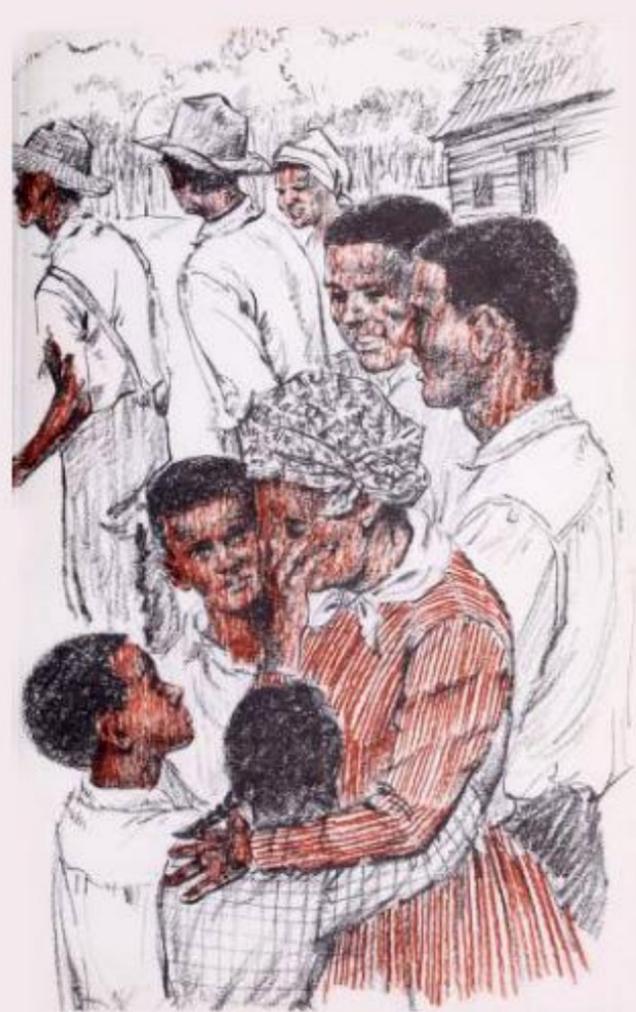
खेत में काम करने वाले सब नीग्रो, कुछ समय के लिये बहुत प्रसन्न हुए. बुकर की माँ ने कहा कि इस दिन की प्रतीक्षा वह कब से कर रही थी. उसकी आँखों से ख़ुशी के आँसू बहने लगे.

लेकिन शीघ्र ही बुकर और उनका परिवार उदास हो गया. उन्हें समझ आने लगा कि उनकी मुसीबतें अभी खत्म न हुईं थीं. अब चूँकि वह स्वतंत्र थे, उन्हें उन बातों के विषय में सोचना पड़ा जिनके विषय में उन्होंने कभी सोचा न था.

उन्हें सोचना पड़ा कि उनका जीवनयापन कैसे होगा.

उन्हें सोचना पड़ा कि आजीविका के लिए अब वह क्या काम करेंगे.

अपने लिये कपड़े और खाना खरीदने के लिये उन्हें पैसे चाहिये थे. वह सब वस्तुएं खरीदने के लिये उन्हें पैसे चाहिए थे, जिन्हें स्वतंत्र लोग खरीदते थे.

कुछ समय बाद बुकर की माँ को पता लगा कि वेस्ट वर्जिनिया में उन्हें काम मिल सकता था. जो थोड़ा-बहुत सामान उनके पास था उसे उन्होंने एक गाड़ी में रख लिया. एक ख़च्चर को गाड़ी में जोत दिया. फिर उस रास्ते पर चल पड़े जो पहाड़ों के ऊपर से होकर जाता था.

यह बहुत लंबी यात्रा थी. लगभग सारे रास्ते बुकर गाड़ी के साथ-साथ चलते रहे.

वेस्ट वर्जिनिया पहुँच कर बुकर को एक कोयला खान में काम मिला. खान में बहुत अँधेरा था और वह बहुत ही गंदी थी.

किसी बच्चे के लिये वहां काम करना बहुत ही डरावना था. लेकिन बुकर जानते थे कि उनकी माँ को पैसों की बहुत ज़रूरत थी. इस कारण वह कोयला खान में सुबह से लेकर रात तक काम करते थे.

स्कूल जाने की इच्छा बुकर के मन में अभी भी थी. उनकी माँ भी वैसा ही चाहती थी. इसलिये खान में दिन-भर काम करने के बाद वह रात में स्कूल जाने लगे.

उस स्कूल में सिर्फ एक अध्यापक था. उनके पास सिर्फ दो या तीन किताबें ही थीं.
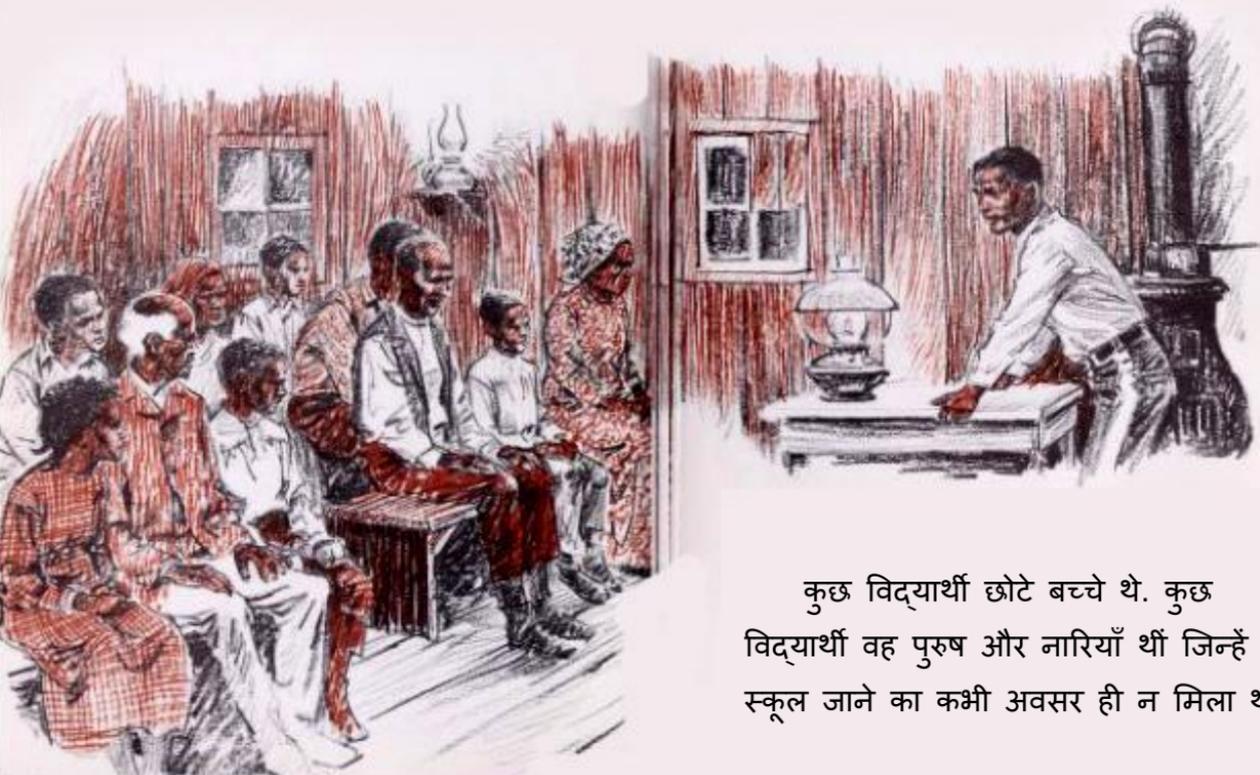
कुछ विद्यार्थी छोटे बच्चे थे. कुछ विद्यार्थी वह पुरुष और नारियाँ थीं जिन्हें स्कूल जाने का कभी अवसर ही न मिला था.
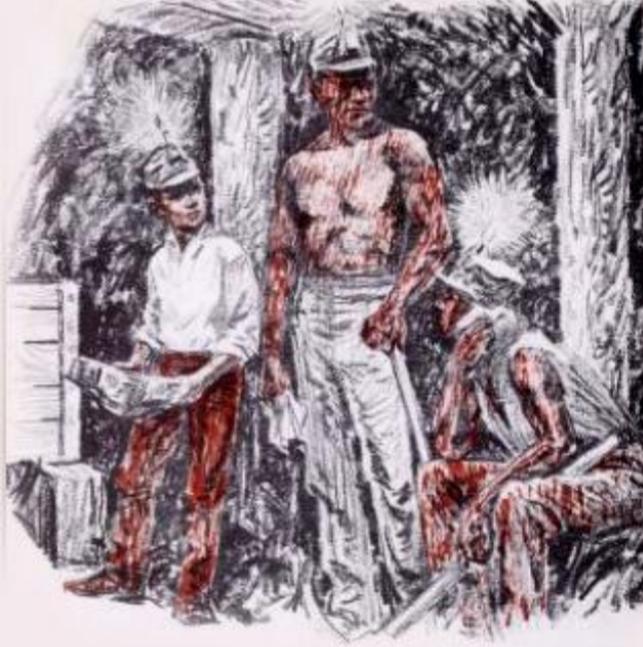
उस स्कूल में बुकर जितना सीख सकते थे उन्होंने सीखा. फिर, एक दुपहर, उन्होंने दो लोगों को आपस में बात करते सुना. वह लोग एक बड़े स्कूल के विषय में बात कर रहे थे जो वर्जिनिया में था और जिसका नाम था हैम्पटन इंस्टिट्यूट.

वह कह रहे थे कि हैम्पटन इंस्टिट्यूट नीग्रो लोगों के लिए स्कूल था. बुकर जैसा गरीब लड़का भी पढ़ने के लिये वहां जा सकता था. जितना वह घर में सीख सकते थे उससे कहीं अधिक वह उस स्कूल में सीख सकते थे.

उस रात बुकर ने अपनी माँ को वह सब बताया जो उन्होंने सुना था. उन्होंने कहा कि वह हैम्पटन इंस्टिट्यूट जाना चाहते थे, भले ही वह बहुत दूर था.

दो वर्षों तक, जितना संभव हुआ, उतने पैसे बुकर ने बचाए. उनके परिवार ने भी उनकी सहायता करने का पूरा प्रयास किया. नगर में रहने वाले अन्य नीग्रो लोगों ने भी सहायता की. उन्होंने कुछ पैसे-धेले बुकर को दिए. उन गरीब लोगों के पास इतना ही धन था.

अंतत: उनके जाने का समय आ गया. उन्होंने अपने मित्रों और परिवार को अलविदा कहा. उनकी माँ बूढ़ी और बीमार थी. वह नहीं जानते थे कि माँ से वह फिर मिल पायेंगे या नहीं.

शुरू का यात्रा उन्होंने घोड़ा-गाड़ी में की. एक बहुत सर्द रात उनकी घोड़ा-गाड़ी पहाड़ों में एक छोटे होटल के पास रुकी. लेकिन होटल के मालिक ने बुकर को होटल में रुकने न दिया. एक नीग्रो, उसने कहा, उसके होटल में कभी नहीं रह पायेगा.

ठंड में अपने को गर्म रखने के लिये बुकर सारी रात होटल के चक्कर लगाते रहे. उन्होंने सुन रखा था कि अमरीका में कई गोरे लोग नीग्रो लोगों से घृणा करते थे. लेकिन ऐसी घृणा से जीवन में पहली बार उनका सामना हुआ था.

पहाड़ों को पार करने के बाद बुकर रेल द्वारा रिचमंड आये. जब वह उस नगर में पहुंचे तो उनके पास कोई पैसे न बचे थे.

वह नगर में घूमने लगे. एक दुकान की खिड़की से उन्होंने अंदर रखीं स्वादिष्ट एप्पल पाईस देखीं. लेकिन एक भी एप्पलपाई खरीदने के लिये उनके पास पैसे न थे.

जैसे ही अँधेरा हुआ, वह लकड़ी के बने एक छोटे-से पुल के पास आये. वह भूखे थे और थके हुए थे. वह पुल के नीचे लेट गये. सोने से पहले जो आवाज़ें उन्होंने सुनी वह थीं पुल के ऊपर लोगों के चलने का शोर.
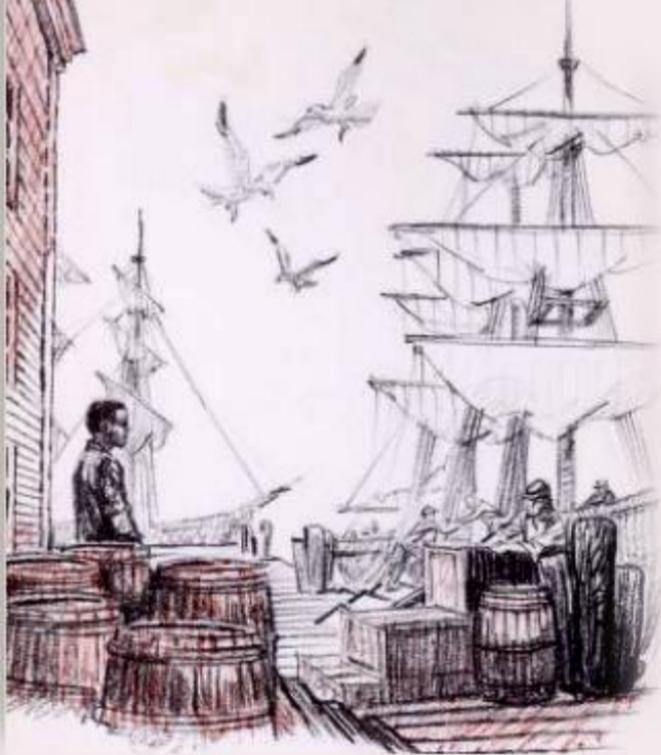
अगली सुबह उन्होंने पानी पर एक जहाज़ देखा. कप्तान ने कहा कि जहाज़ पर भरे बक्से ढोने का काम उन्हें मिल सकता था.

बुकर ने एक सप्ताह तक वह काम किया. पैसे बचाने हेतु वह हर रात उसी लकड़ी के पुल के नीचे सोये. सप्ताह समाप्त होते-होते उन्होंने इतने पैसे बचा लिये थे कि वह हैम्पटन इंस्टिट्यूट तक की यात्रा रेल द्वारा सकते थे.
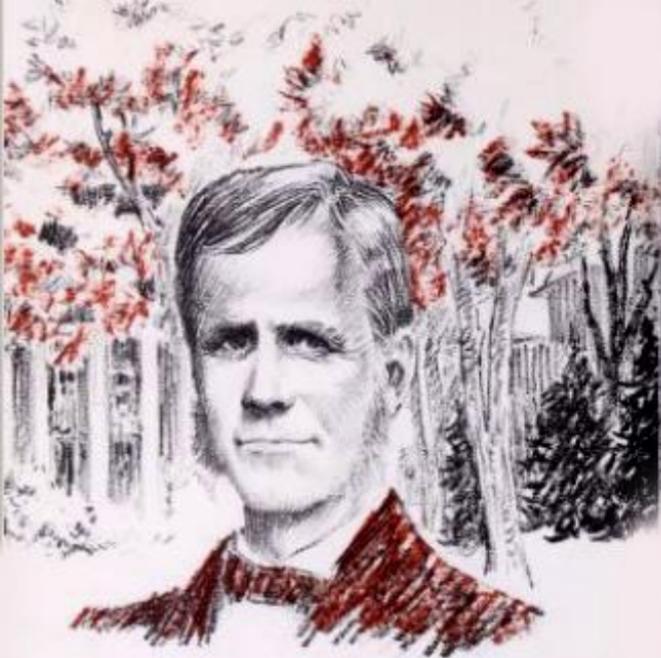
जनरल सैमुअल सी. आर्मस्ट्रांग हैम्पटन इंस्टिट्यूट का प्रबंधन देखता था. सिविल वॉर के समय वह यूनियन की सेना का अधिकारी था. अब वह दक्षिण के गोरे और नीग्रो लोगों की यथा संभव सहायता करना चाहता था.

बुकर टी. वाशिंगटन हैम्पटन में तीन वर्षों तक रहे. उन्होंने कठिन किताबें भी पढ़ना सीख लिया. उन्होंने लोगों के सामने अच्छा बोलना और दर्शकों को अपने बातों से मोहित करना भी सीखा.
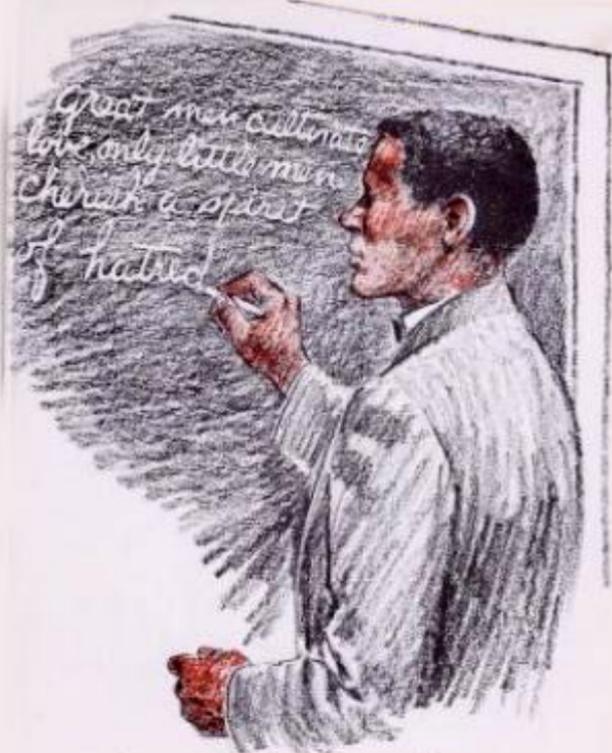
हैम्पटन में उन्होंने एक बात और समझी. वह एक अध्यापक बनेंगे और अन्य नीग्रो लोगों की सहायता करेंगे ताकि वह लोग संसार में अपने लिये कोई जगह बना पायें.

एक दिन जनरल को एक पत्र मिला. पत्र में लिखा था कि नीग्रो लोगों के लिये टस्किगी, अल्बामा में एक नया स्कूल खोला जा रहा था.

क्या जनरल सहायता करेंगे? क्या वह हैम्पटन से अपना एक अध्यापक भेजेंगे जो नए स्कूल में प्रिनिपल का कार्य करेगा?
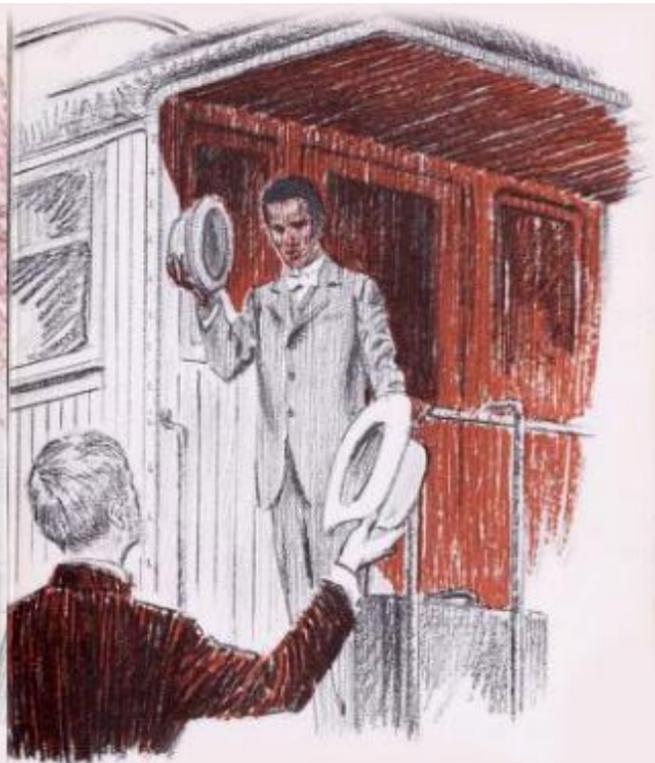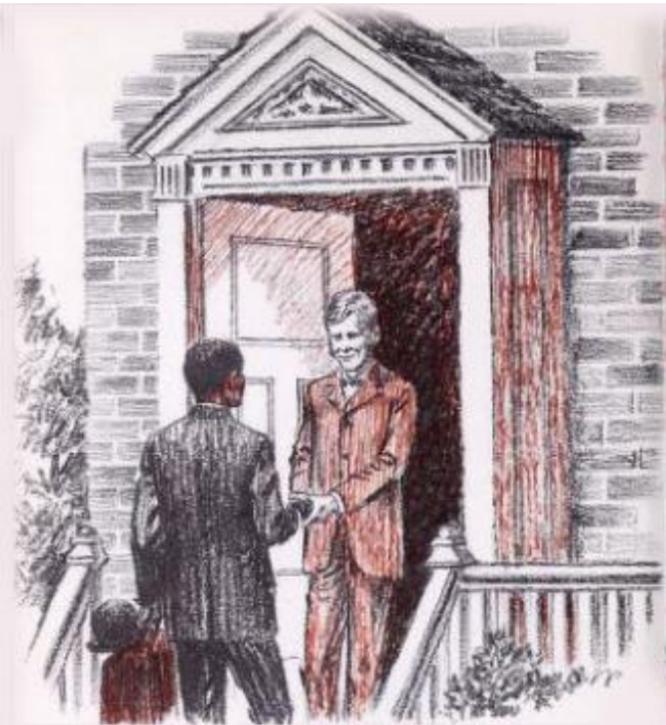
जनरल ने उत्तर दिया कि वह सबसे उत्तम अध्यापक को भेजेगा. उसने बुकर टी. वाशिंगटन को भेज दिया.

दो वर्षों तक बुकर ने वेस्ट वर्जिनिया में स्कूल अध्यापक का काम किया. फिर वो एक रात्रि स्कूल चलाने के लिये, जनरल आर्मस्ट्रांग ने उन्हें हैम्पटन वापस बुला लिया.
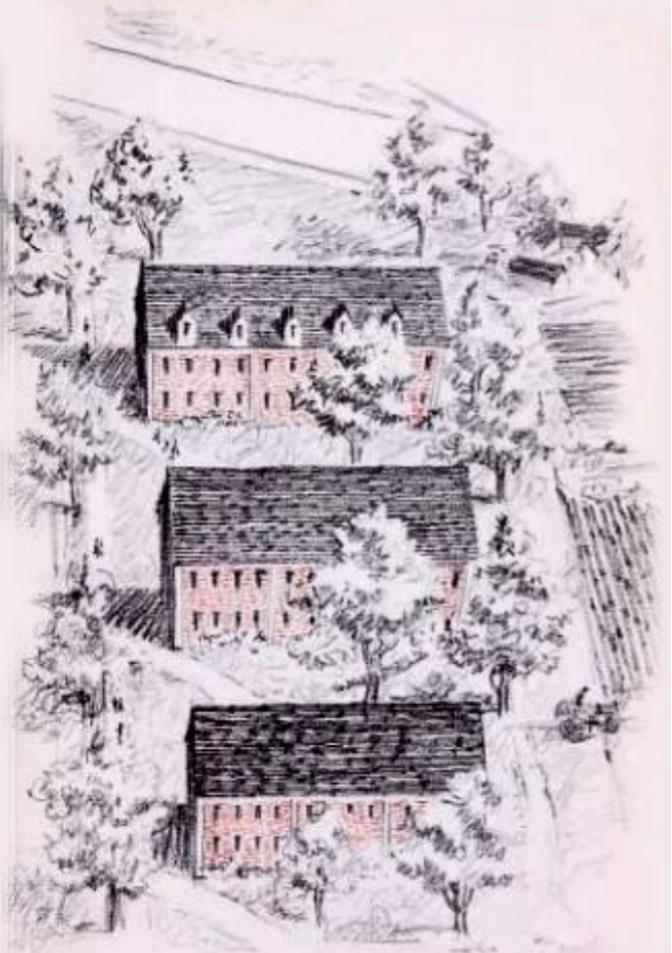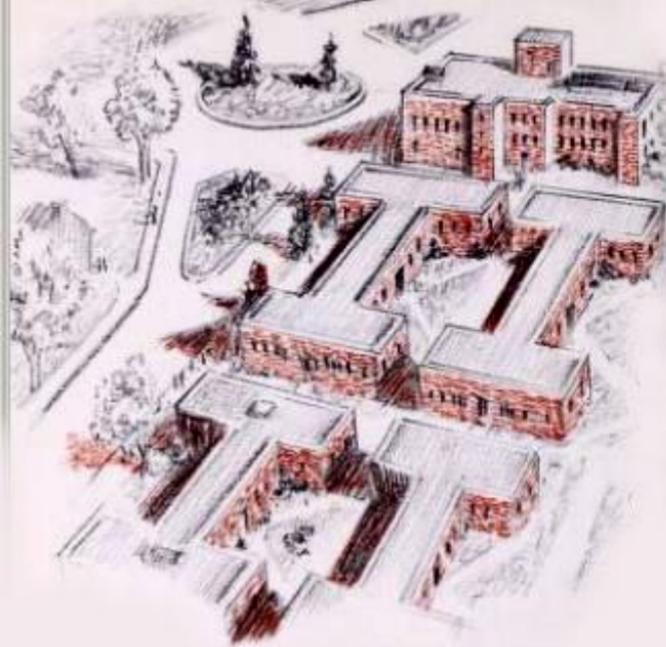
जीवन के अंतिम दिनों तक बुकर टी. वाशिंगटन ने टस्किगी स्कूल में प्रिंसिपल के रूप में कार्य किया. समय बीतने के साथ, टस्किगी इंस्टिट्यूट एक विख्यात स्कूल बन गया. अमरीका में यह पहला स्कूल था जो नीग्रो लोग स्वयं चलाते थे.

टस्किगी में विद्यार्थी कई विद्यायें सीखते थे.

उन्होंने घरों के लिये मेज़, कुर्सियां और पलंग बनाने सीखे.

उन्होंने फार्म चलाने सीखे.

उन्होंने सीखा की स्वस्थ रहने और मज़बूत बनने के लिये उन्हें किस प्रकार का भोजन खाना चाहिये.

और उन्होंने कुछ और भी सीखा. उन्होंने अपने स्कूल और अपने-आप पर गर्व करना सीखा.

टस्किगी इंस्टिट्यूट के प्रिंसिपल का कार्य सरल न था. स्कूल गरीब था. बुकर टी. वाशिंगटन को बार-बार पैसों का प्रबंध करना पड़ता था.

उन्होंने उत्तरी अमरीका जाकर लोगों को टस्किगी इंस्टिट्यूट की कहानी सुनाई. उन्होंने सारा वृत्तांत इतने अच्छे ढंग से सुनाया कि कई धनवान लोगों ने स्कूल के लिए पैसे दिए.
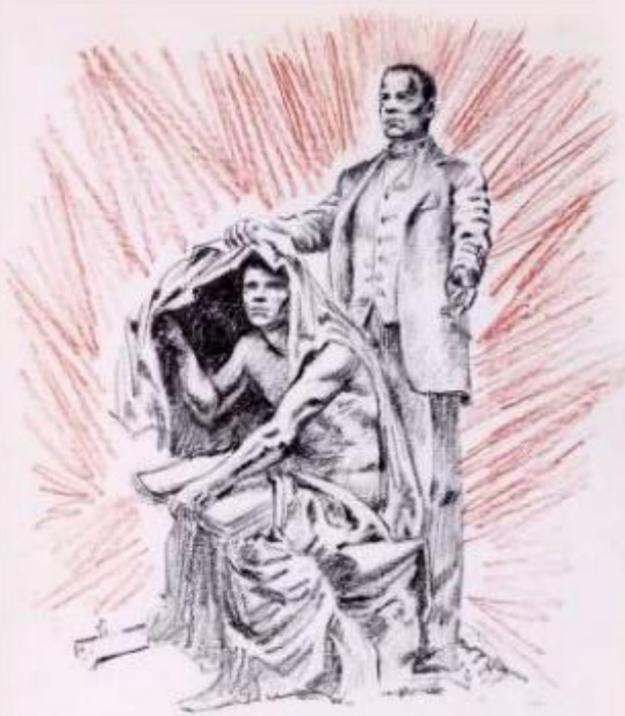
जैसे-जैसे समय बीता, टस्किगी इंस्टिट्यूट विश्व प्रसिद्ध हो गया. बुकर टी. वाशिंगटन भी प्रसिद्ध हो गये.

उत्तर और दक्षिण, दोनों ओर उनके कई मित्र थे. एक वसंत में उनके मित्रों ने देखा कि वह बहुत थक चुके थे. उन्होंने सुझाव दिया कि उन्हें थोड़ा विश्राम करना चाहिये. उन्होंने बुकर को टिकट दिया और उन्हें जहाज़ द्वारा यूरोप जाने के लिये कहा. बीस वर्षों में पहली बार वह छुट्टी पर गये.

जहां भी वह जाते वहां लोग उनसे मिलने को आतुर होते. वह उस व्यक्ति को देखना चाहते थे जो एक दास पैदा हुआ था और जो बड़े होकर बहुत प्रसिद्ध हो गया था.

इंग्लैंड में रानी विक्टोरिया के निमंत्रण पर वह विंडसर पैलेस गये और रानी से मिले. रानी ने उनसे टस्किगी इंस्टिट्यूट के बारे में जानकारी ली. उसने दास प्रथा के बारे में पूछा. यद्यपि वह स्वयं एक प्रसिद्ध रानी थी, उसने भी उनसे वही प्रश्न पूछे जो अन्य लोग पूछते थे.
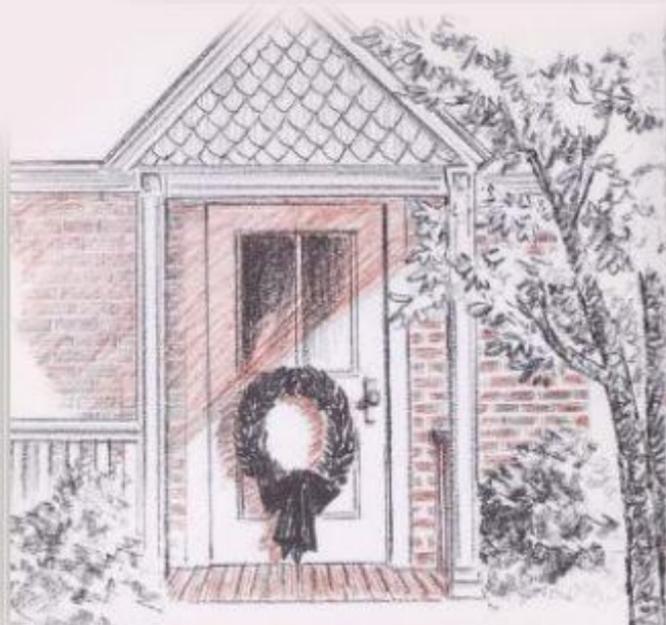
यात्रा पूरी होने पर बुकर टी. वाशिंगटन घर लौट आये. उन्होंने कई वर्ष और टस्किगी में कठिन परिश्रम किया.

शायद उन्होंने कुछ अधिक ही परिश्रम किया. सन 1915 में उनका देहांत हो गया. कई लोगों को लगा कि कठिन परिश्रम ही उनकी मृत्यु का कारण था.

कोई भी मनुष्य हर किसी को प्रसन्न नहीं कर सकता. बुकर टी. वाशिंगटन भी सबको प्रसन्न न कर पाए थे. उनकी मृत्यु के बाद कुछ लोगों ने कहा कि टस्किगी इंस्टिट्यूट अधिक अच्छा हो सकता था.
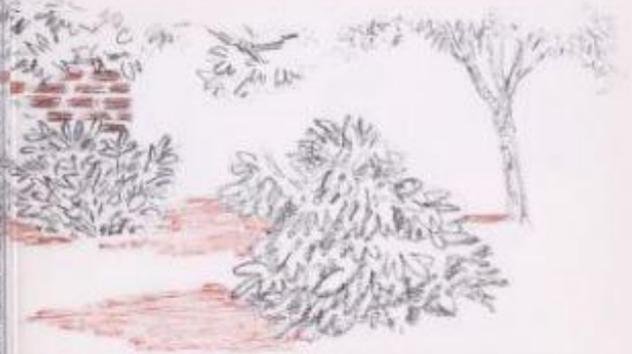
थोड़े से लोगों ने यह भी कहा कि बुकर टी. वाशिंगटन को उन बातों का भी विचार करना चाहिये था जिनका विचार उन्होंने कभी नहीं किया. उन्होंने कहा कि बुकर टी. वाशिंगटन को वह काम भी करने चाहिए थे जो उन्होंने नहीं किये थे.
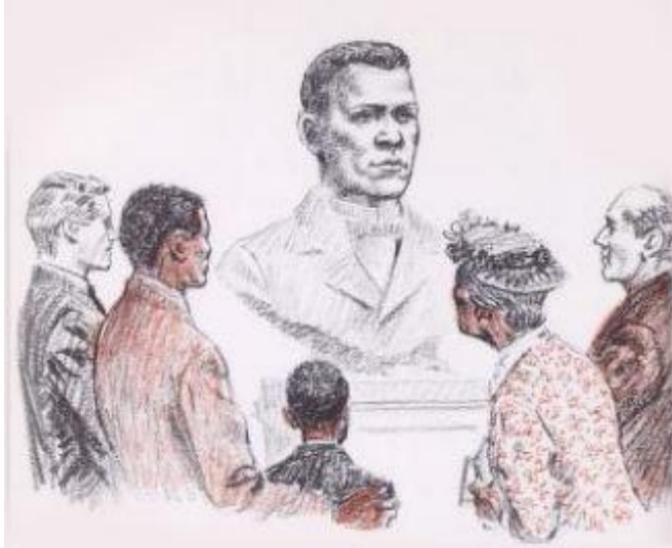
वैसे अधिकतर लोगों ने कहा कि बुकर टी. वाशिंगटन एक महान व्यक्ति थे. उन्होंने टस्किगी में एक अद्भुत स्कूल बनाया था. उन्होंने अपनी जाति के लोगों को स्वाभिमानी बनाया था. अधिकतर लोग उन्हें इन कार्यों के लिये सदा याद रखेंगे.

वह उन्हें उस व्यक्ति के रूप में याद रखेंगे जो स्वयं गुलाम पैदा हुआ था और जिसने अमरीका के नीग्रो लोगों को गुलामी से बाहर निकलने में सहायता की थी.

समाप्त